AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

गाँधी और जयनंदन की कहानियों में आम आदमी का संघर्ष

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. मधुलता बारा,
शोध निर्देशक,
साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

बरातू राम ध्रुव,
शोधार्थी,
साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

जयनंदन की कहानियों में आम आदमी अर्थात् पात्रों की अधिकता है। उनके जीवन–संघर्ष एवं समस्याओं का चित्रण जयनंदन ने अपनी विभिन्न कहानियों में समाहित किया है। वे कहानियाँ–संग्रह हैं– 'सन्नाटा भंग', 'एक अकेले गान्ही जी', 'दाल नहीं गलेगे अब', 'घर फूंक तमाशा', 'सूखते स्रोत', 'गाँव की सिसकियाँ', 'भितरघात', 'सेराज बैण्ड बाजा' और संकलित कहानियाँ। जयनंदन ने स्वंय आम आदमी का जीवन जीया है इसलिए उनकी कहानियों में आम आदमी की समस्याओं का बारिकी से चित्रण हुआ है।

मुख्य शब्द

जयनंदन, गॉधी, आम आदमी.

प्रस्तावना

भारत के महान संतों में एक मोहन दास करमचंद गाँधी जो शरीर से दिखने में बेहद कमजोर लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति वाले, बहुत रचनात्मक और बहुत दूरदर्शी विचारक थे। उनका संपूर्ण जीवन भारतीय आम जनमानस की सेवा करते हुए उनके हित व अधिकारों के लिए लड़ते हुए संघर्षमय व्यतीत हुआ। गाँधीजी अपनी प्रसिद्ध पत्रिका 'इंडियन ओपिनियन' में बराबर भारतीय समाज पर लगे प्रतिबंधों के विरुद्ध आवाज़ उठाते रहे हैं। उनके समय में भारतीय लोग ट्राम गाड़ियों और रेलगाड़ियों में सम्मान के साथ यात्रा नहीं कर सकते थे। भारतीय व्यापारियों को नैटाल में सरकार द्वारा बार–बार परमिट लेने के लिए आदेश दिया जाता था, जिसका विरोध करते हुए उन्होंने व्यापारियों को दुबारा परमिट नहीं लेने की सलाह दी। तात्कालीन सरकार द्वारा सोलह वर्ष से अधिक अवस्था वाले भारतीयों पर प्रतिवर्ष एक पौंड कर लगाया गया था इसके अतिरिक्त प्रमाण–पत्रों व प्रवेश–पत्रों पर भी फीस लगाई जाती थी। ऐसे कई अपमानजनक कानूनों और नियमों को रद्द कराने के लिए गाँधीजी को विरोध स्वरूप अदालतों की शरण जाना पड़ता था, जिसके बावजूद फैसला भारतीयों के पक्ष में नहीं आता था।

संघर्ष का अर्थ होता है– टकराव, प्रतिस्पर्धा या निरोध। जब व्यक्ति का व्यक्ति से, व्यक्ति का समूह से, समूह का व्यक्ति से या समूह का समूह से टकराव या विरोध होता है, तो उसे संघर्ष कहा जाता है। संघर्ष कई प्रकार हो सकता है, जैसे– प्रत्यक्ष संघर्ष, वर्ग–संघर्ष, सामाजिक संघर्ष, संघर्ष विरोधी संघर्ष, राजनयिका संघर्ष एवं प्रजातीय संघर्ष आदि। सभी का जीवन संघर्षमय होता है चाहे वह व्यक्ति कोई खास हो या आम। संघर्ष का स्वरूप

अलग–अलग हो सकता है इसलिए कहा गया है कि संघर्ष का ही दूसरा नाम जीवन है। जीवन में सफलता का सच्चा आनंद तभी माना जा सकता है जब आपने जीवन भर भरपूर संघर्ष कर विजय या लक्ष्य को प्राप्त किया हो। जीवन में सफलता अर्जित करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कठिन परिश्रम व पसीना बहाना पड़ता है, संघर्ष व कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, कई प्रकार के दुःख, तकलीफ उठानी पड़ती है, इसके अलावा कई मानसिक एवं शारीरिक कष्टों को भी सहना पड़ता है, तब जाकर सफलता नसीब होती है। इन सब संघर्षों के बिना सफलता संभव नहीं है। लोगों को संघर्ष से जी चुराकर दूर भागना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें अपने गले से लगाकर उनमें आनेद की खोज करने का प्रयास करना चाहिए। संघर्ष के बाद जीवन में जो सूर्योदय होता है, वह बहुत ही रोचक, प्रभावी व आनंददायक हो सकता है। जयनंदन ने अपनी कहानियों में आम आदमी की समस्याओं का बखूबी चित्रण किया है।

कहानियों में आम आदमी का संघर्ष

'झुनझुना' कहानी में एक आम आदमी करूआ सोरेन के जीवन–संघर्ष का चित्रण किया गया है, जो अपने आदिवासी लोगों पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध लड़ते हुए उस पर ठोस कार्यवाही के लिए एक क्षेत्रीय दल के जिला कार्यालय में अत्याचारियों के खिलाफ शिकायत करने पहुँच जाता है, जहाँ करूआ से पहले ही कार्यालय में उनके विरोधी लोग बैठे हुए थे, जो उनके साथ इस घटना को अंजाम देते हैं– ''दो आदमियों ने धक्के देकर उसे बाहर कर दिया, तब ही उसकी दृष्टि झरना के गाँव सोनाडीह के छोकरों पर और उस भगत पर पड़ी जो लाटो मुंडा के बेटे की बीमारी के समय डायन की शिनाख्त कर रहा था। ये सभी अभी हाल ही में ईसाई बने थे। शायद वे पार्टी के सदस्य भी बन गये थे। उनमें से एक कारू को देखते ही चिहुंक पड़ा, 'अरे देखो ! सांप हियां भी फुफकारने कआ गिया। पकड़ो साले को... ।' इतना सुनते ही भगत लपक पड़ा। तीन–चार छोकरे भी उसकी ओर बढ़ गये फिर उसके ऊपर लात–घूसों की मुसलाधार बौछार शुरू हो गयी और तब थोड़ी देर बात वह होश खो बैठा।''[1] कथा–नायक करूआ सोरेन अपने आदिवासी लोगों के हित और अधिकार के लिए लड़ते एवं मार खाते हुए संघर्षरत् दिखाई देता है।

'मुजफ्फरपुर की लीची' कहानी में कथा–नायक मास्टर ब्रजभूषण का जंगी पहलवान से लड़ते हुए जीवन–संघर्ष को रेखांकित किया गया है– ''मास्टर जी जंगी पर अपने जोर की आजमाइश करने लगे। बचाव में जंगी से एक धक्का लग गया और मास्टर जी संतुलन खोकर चित गिर पड़े जमीन पर। उनकी आँखें आँसुओं से डबडबा आयीं। सुधा ने उठाना चाहा तो उन्होंने उसके हाथ झटक दिये। वे खुद ही उठे और जंगी को यूं देखने लगे जैसे मेमना देखता है कसाई को। उनके गले से हिचकियां निकल पड़ी। हां–हां, मारो मुझे... रूक क्यों गये ! मैं बहुत बड़ा कसूरवार हूँ कि तुम गिरे लोगों के बीच मैं गिर नहीं रहा, तुम सड़े लोगों के बीच मैं सड़ नहीं रहा।''[2] मास्टर का यह संघर्ष शहर के प्रसिद्ध नामी धनी व राजनीतिक पहुँच रखने वाले विनय किशोर बाबू द्वारा भेजे गुंडे जंगी से इसलिए है कि मास्टर ने विनय किशोर द्वारा अपने फुफेरी बहन को हिंदी का पेपर में पास करने के लिए भेजे रिश्वत को ठुकरा दिया था। विनय किशोर जब मास्टर जी पर सभी प्रकार के दाँव–पेंच व प्रलोभन फेल होते देख उनको सबक सिखाने धन–बल के माध्यम से प्रयोग करते हुए किराये के गुंडे जंगी के द्वारा किसी तरह मास्टर को डरा–धमका कर करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

'खैरियत की खाक' कहानी में गाँव का एक आम आदमी व कथा–नायक छुनन मियां के संघर्ष को उजागर किया गया है– ''अंततः जब पानी सिर से ऊपर हो गया तो इसके खिलाफ एक मोर्चा बनाना शुरू हुआ। रग्घू, जागो, परेमन, मूला आदि उसके शिकार कई बार हो चुके थे, ने तय किया कि जोवासर की किसी भी शैतानी–मक्कारी से अब मिलकर टक्कर लेना ही एक समाधान है, गाँव में गैरत के साथ रहने का। छुनन मियां का मामला मोर्चे के समक्ष एक चुनौती बनकर सामने आया। सबने तय कर दिया कि इस लड़ाई को आगे ले जानी है। छुनन मियां बूढ़े हैं... कमजोर हैं.... निरीह और भोले–भाले हैं... तो इसका यह मतलब नहीं कि अपनी पुश्तैनी ज़मीन से भी बेदखल कर दिये जाये।''[3] गाँव के तानाशाह जोवासर बाबू जब बूढ़े छुनन मियां को उसके पुश्तैनी जमीन से बेदखल करने

के लिए उस पर दबाव बनाते हैं, तब उनके द्वारा सताए गए गाँव के कुछ और लोग छुनन मियां के संघर्ष के पक्ष में हो जाते हैं और जोवासर के विरुद्ध आवाज उठाने को तैयार होते संगठित दिखाई देते हैं।

'नचनिया चोखेलाल' कहानी में एक आम आदमी तथा नाच–गान करने वाले कलाकार चोखेलाल के जीवन–संघर्ष को रेखांकित किया गया है– ''कैमरा वाले लड़के से रहा न गया। उसने उसके भतीजे को सम्बोधित किया, 'सुनो भाई ! चोखेलाल को चाहने वालों की आज भी कमी नहीं है। देखो, मैं आया हूँ इन्हें देखने। तुम इन्हें जिस तरह कोस रहे हो वह न्यायोचित नहीं है। तुम्हें शायद मालूम न हो कि इनकी यह दशा इसीलिए हो गई कि तुम जैसे जाहिलों और गँवारों के बीच में फँसकर रह गये। अनाड़ियों ने इन्हें कोयला समझ लिया और इनकी परख करने के लिए जौहरी इन्हें मिला नहीं। इनमें वो सिफत थी कि बड़े घर में पैदा होते तो बिरजू महराज बन जाते, जिसे भारत सरकार पद्मश्री से सम्मानित करती और कई बड़े शहरों में इनकी नृत्यशालाएँ चलतीं। इन्हें पंडित जी कहकर पुकारा जाता और इनसे सीखने वालों की लाइनें लगी रहतीं। लोग इनसे सीख–सीख कर धन्य–धन्य महसूस करते। टी.वी. पर इनका गुणगान और इंटरव्यू प्रसारित होता, अखबारों में आए दिन इनके बयान छपते, इनकी छींक–खांसी भी खबर बन जाती। बड़े मंचों पर इनका गायन होता और 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' में इनके भी चेहरे दिखाए जाते। अवसर और पहुँच का नाम बिरजू महराज, लता मंगेशकर और किशोर कुमार होता है दोस्त, वरना इस देश में हजारों बिरजू महराज, लता मंगेशकर और किशोर कुमार विभिन्न गलियों में, झोपड़ियों में, खोलियों में इसी तरह तुम जैसे अपने सगे लोगों द्वारा प्रताड़ित होकर बर्बाद हो जाते हैं।''[4] चोखेलाल नाच–गान और अभिनय में महारत हासिल प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे, जो उचित अवसर और ढलती उम्र में रोजगार नही ंमिलने के कारण भरी दोपहरी में गेहूँ काटने की मजदूरी करने पर मजबूर होते चित्रित है। जवानी के उनके नाच–गान और अभिनय का पूरा क्षेत्र दीवाना था, उन्हीं चहेतों में एक वह किशोर लड़का भी था जो अपने गाँव का कार्यक्रम में चोखे का अभिनय देखकर उससे काफी प्रभावित हुआ था और चोखे को भेंट स्वरूप एक कैमरा प्रदान किया। वह लड़का वर्षों बाद ऑफिसर बनकर अपनी शादी में चोखे को नचाने के लिए उसका पता पूछकर ढूँढते हुए उस खेत तक पहुँच जाता है, जहाँ चोखे अपने सगे भतीजे द्वारा प्रताड़ित होते हुए उसके खेत में गेहूँ काट रहे थे, जिसे वह ऑफिसर सुन कर चोखे के संघर्ष का कारण बताते हुए उसके भतीजे को चोखे की उपयोगिता एवं महत्ता पर प्रकाश डालते हुए चित्रित है। इस तरह चोखे नाच–गान से उतर कर भीषण गर्मी में खेत पर गेहूँ काटते और भतीजे से पीड़ित होते चित्रित हैं।

'भिरतरघात' कहानी में कथा–नायक मकसूद और उसके पारिवारिक जीवन–संघर्ष को चित्रित किया गया है– ''मकसूद का भी एक भाई जो ट्रक ड्रायवर था और घर की रीढ़ था, एक महीन से ट्रक और माल सहित गायब था। पुलिस उसे ढूँढने के बजाय उल्टे परिवार पर तोहमत गढ़ रही थी कि माल डकारने के लिए उसने यह चाल चली है और परिवार वालों को इसकी पूरी जानकारी है। गाहे–ब–गाहे मालवाले सेठ के सेठ दबाव पर पुलिस घर से किसी–न–किसी को उठाकर थाने ले जाती और घंटों जलील करके पूछताछ करती थी। मकसूद एकदम असहाय बन गया... कैसे निकले इस पचड़े से। पुलिस की इस बेमुरव्वती और लगातार दुश्मन की तरह व्यवहार करने की नीयत पर उसकी सहनशक्ति एक दिन जवाब दे गयी और उसने थाने के सामने बैठकर भूख हड़ताल करने का फैसला कर लिया।''[5]

'टेढ़ी ऊँगली और घी' कहानी में एक आम बुजुर्ग औरत के आत्मसंघर्ष को चित्रित किया गया है– ''अगली छुट्टियों में वह आयी तो बिल्टू के पहले उससे मिलने पड़ोस की एक बुजुर्ग महिला आ गयी। उसने अत्यंत दयनीय और विनीत भंगिमा बनाकर कहा, 'बेटी, मैं महीनों से तुम्हारी राह तक रही थी। तुम जानती हो कि मैं एक अकेली औरत हूँ और मेरे दो छोटे–छोटे बच्चे हैं। टाइगर फोर्ट नामक बिल्डर ने मेरी जमीन पर कब्जे के लिए पूरा जाल फैला दिया है और वह हमें डरा–धमका कर जबर्दस्ती करने पर उतारू है। हमने मदद के लिए कई कथित पराक्रमियों और पुलिस अधिकारियों से गुहार लगायी, मगर सबने उस बिल्डर का नाम सुनते ही अपने हाथ खड़े कर लिया। तुम चाहो तो हमें उससे मुक्ति मिल सकती है, अन्यथा हम बर्बाद हो जाएँगे।''[6] उस बुजुर्ग औरत को अच्छी तरह से पता था कि कथा–नायक बल्टूराम बोंबोगा शहर का सबसे दबंग, खूँखार, रौबवाला साथ ही एक नेक

इंसान भी था जो कथा–नायिका रेशमी के प्रति बचपन स्कूली जीवन से आकर्षित था। समय के साथ रेशमी ऊँची शिक्षा प्राप्त करने दूसरे बड़े शहर चली गई थी और जब भी उसका शहर आना होता था। बिल्टूराम किसी माध्यम से पता कर सबसे पहले रेशमी से मिलने पुष्पगुच्छ लेकर पहुँच जाता था। रेशमी भी बिल्टू का धाक, रौब और नाम सुनकर और उनके मिलने के अंदाज से काफी खुश हो जाती थी इसीलिए वह औरत बिल्टू से पहले ही आकर रेशमी के आगे हाथ जोड़कर अपनी समस्याओं से अवगत कराती हुई निवेदन कर कहती है कि तुम कहोगी तो बिल्टू मना नहीं करेगा और हमारा परिवार उस जमीन से बेदखल होने से बच जाएगा। बुजुर्ग औरत का जीवन–संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया गया है।

'सेराज बैंड बाजा' कहानी में एक आम आदिवासी लड़की माघी खलखो के संघर्ष को चित्रित किया गया है, जो एक नेता और हाल में संसद चुनाव जीते हुए उनके चमचों से सीधी टक्कर ले लेती है। माघी का स्वयं का एक बैंड पार्टी है जो पूरे क्षेत्र व शहर में बहुत प्रसिद्ध थी। ''अगले दिन उस पतित और भ्रष्ट नेता के गुण्डों ने सेराज बैंड बाजा में घुसकर भारी तोड़–फोड़ मचा दी। कई नये इंस्ट्रुमेंट हैंगर से निकाल कर पटक दिये गये और कई नयी पोशाकें फाड़ दी गयीं। माघी को इस उत्पात का कोई दुख न हुआ। उसे बस सन्तोष था तो इस बात का कि एक शातिर देशद्रोही नेता के जश्न में शामिल होने से उसने खुद को बचा लिया।''[7] एक भ्रष्ट नेता जो विभिन्न राजकोषीय रुपयों के भ्रष्टाचार के आरोप में बहुत दिनों से जेल में बंद था और जेल में रहकर भी संसद का चुनाव जीत लेता है। उनकी जीत के जश्न में उनके चमचों द्वारा मुहमांगी रकम पर माघी को बैंडबाजा बजाने के लिए पेशकश किया जाता है। न कहने पर परिणाम क्या होगा जाने बगैर ही इस प्रस्ताव को माघी विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर देती है। उन चमचों द्वारा माघी को तो कोई नुकसान नहीं पहुँचाया जाता है, बल्कि अपना सारा गुस्सा निकालते हुए माघी के बैंडबाजा सहित पूरे समान को तहस–नहस कर आर्थिक नुकसान पहुँचा देते हैं। इससे माघी का जमा–जमाया व्यवसाय और जीवन संघर्षमय हो जाता है।

'ठेंगा' कहानी में एक आम व अभागे दंपत्ति पदारथ पाण्डेय एवं रूही जुलाहिन के संघर्षरत जीवन को चित्रित किया गया है– ''आशा के विपरीत गाँव वालों का अत्याचार दोनों पर कम होने के बजाय क्रमशः बढ़ता ही जा रहा था। एक दिन पदारथ के पैरों पर किसी ने बिच्छु उछाल दिया। डंक से तिलमिलाकर जमीन पर लेट गया। बदमाशों के ठहाके हवा में तैरने लगे। रोते–बिलबिलाते वह किसी तरह दीवानखाने पहुँचा तो रब्बानी बाबू और लत्तू मियां ने झाड़–फूंक और दवा–दारू करवाई। दूसरे ही दिन गुसल के लिए गई रूही को कुछ लफंगों ने पकड़कर सिर मुड़ देना चाहा। उनसे छुटकर वह किसी तरह भाग तो आई पर सब्र का इन्तहा हो गया। पदारथ रब्बानी बाबू के सामने फूट–फूट कर रो पड़ा। चूँकि अब दिशा –फरागत के लिए भी जाने में उनकी कंपकंपी छूट जाती। रब्बनी बाबू बड़े पेशोपेश में पड़ गए। उन्हें अपने किए पर कुछ हद तक अफसोस होने लगा। चूँकि वे देख रहे थे कि दोनों का जीना दुश्वार हो गया और इस मसले को लेकर दोनों कौमों के बीच की खिंची लकीर अब खाई की शक्ल अख्तियार करने लग गई। इस हादसे के बाद वे खुद बड़ी तेजी से बूढ़े होते जा रहे थे। गाँव को इस हाल में देखकर उन्हें इत्मीनान कि मौत आ भी नहीं सकती थी। वे अब साफ देख रहे थे कि मोहब्बत की इमारत को अंजाम देने में एक बार फिर उनके हाथ नाकामयाब हो गए, फिर क्यों नहीं अलखदेव सुकुल को मुखियागिरी सौंपकर उसका अहम तुश्ट कर दें और इसका कोई रास्ता निकालकर खुद निश्चिंत हो जाए? अगले दिन उन्होंने बाइज्जत अलखदेव सुकुल को बुलवाया। काफी सौहार्द्रपूर्ण होकर उससे बातचीत की। महत्व पाकर वह खुश हो उठा। बतौर उपाय उसने सुझाया कि पदारथ रूही जुलाहिन से संबंध–विच्छेद कर पाँच तीर्थ भ्रमण कर ले और सिर मुड़ाकर गंगा–स्नान कर ले, फिर जाति वालों को भोज देकर जाति में शामिल हो जाए। उसे पुरानी जगह वापस मिल जाएगी तथा उसके साथ सबका व्यवहार सामान्य हो जाएगा।''[8] दो अभागे प्रेमी दंपत्ति एक अंधे पदारथ पाण्डेय और दूसरा विधवा रूही जुलाहिन दोनों से पहले इनकी जाति–बिरादरी वाले कोई भी लड़की–लड़का शादी करने को तैयार नहीं थे और जब थक–हार कर ये दोनों एक–दूसरे को अनुकूल एवं गाँव के प्रसिद्ध जमींदार रब्बानी मियां की मेहरबानी पाकर शादी रचा लेने पर इनकी शादी को लेकर गाँव वालों के साथ–साथ दोनों की जाति वालों को भी फूटी आँख नहीं सुहाता है और वे लोग इन दोनों को अलग करने के लिए ईर्ष्यावश तरह–तरह की यातनाएँ देना प्रारंभ कर

देते हैं।

निष्कर्ष

जयनंदन ने अपनी विभिन्न कहानियों में आम पात्रों के संघर्ष का चित्रण कुशलता पूर्वक मार्मिक रूप से रेखांकित किया है। उन्होंने स्वयं आम आदमी का जीवन व्यतीत किया है। इस कारण आम आदमी की समस्याओं को देखा, परखा, महसूस किया व भोगा हुआ होने के कारण उनकी समस्याएँ यथार्थ प्रतीत होते हैं, जैसे– झुनझुना कहानी का करूआ सोनरेन स्वयं आम आदमी होकर अपने जैसे और आम आदमी के हित व अधिकार के लिए लड़ते हुए संघर्ष दिखाई देता है। इसके लिए उसे विरोधियों द्वारा मार भी खानी पड़ती है।

'मुजफ्फरपुर की लीची' में एक साधारण शिक्षक ब्रजभूषण अपनी ईमानदारी व सिद्धांत पर अडिग होने के कारण संघर्षरत् दिखाई देता है। 'खैरियत की खाक' में एक आम बूढ़े व्यक्ति छुनन मियां को अपनी पुश्तैनी जमीन बचाने के लिए गाँव के तानाशाह व्यक्ति जोवासर बाबू के साथ लड़ते हुए संघर्षरत चित्रित किया गया है। अपनी ही जमीन के लिए उन्हें पेशी–अदालत के चक्कर लगाने पड़ते हैं।

'नचनिया चोखेलाल' में नाच–गान एवं अभिनय में महारत हासिल एक आम आदमी चोखेलाल के संघर्ष को प्रकाशित किया गया है। उचित अवसर व पहुँच न होने के कारण उन्हें अधेड़ अवस्था में पेट पालने के लिए चिलचिलाती धूप में गेहूँ काटते हुए दिखाई देते हैं।

'भितरघात' कहानी में निम्नवर्गीय परिवार के संघर्षरत जीवन को रेखांकित किया गया है। परिवार के सदस्य गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी एवं शासन के भ्रष्ट रवैये के कारण संघर्षमय जीवन व्यतीत करते हुए दिखाई देते हैं। 'टेढ़ी ऊँगली और घी– कहानी में एक आम बुजुर्ग महिला की संघर्ष को उजागर किया गया है। वह महिला अपनी जमीन को एक बिल्डर के द्वारा हड़पने की धमकी से घबरा कर अपनी गुहार लिए, पुलिस, थाना, दरोगा, नेता व दबंग लेागों पास जाकर अपनी समस्या रखते व भटकते हुए चित्रित हैं। 'सेराज बैंडबाजा' में एक आम लड़की माघी के जीवन–संघर्ष को उकेरा गया है। माघी एक नवनिर्वाचित सांसद के चमचों से सीधी टक्कर लेती हुई उन चमचों द्वारा विजय जुलूस में बैंड बाजा बजाने के रखे गए प्रस्ताव को ठुकरा देती है। बदले में उन चमचों द्वारा माघी का बैंड बाजा के पूरे साज–सज्जा को तोड़–फोड़ दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसे आर्थिक संकटों का सामना करते हुए संघर्षमय जीवन व्यतीत करने पर मजबूर होना पड़ता है। 'ठेंगा' कहानी में दो विजातीय दम्पत्ति अंधे पदारथ पाण्डेय व रूही जुलाहीन दोनों को जाति–धर्म से हटकर शादी करने के कारण समाज व गाँव वाले उन पर जुल्म ढाते हुए उन्हें स्वीकार नहीं करते हैं। वे दोनों तरह–तरह की यातनाएँ झेलते हुए संघर्षपूर्ण जीवन जीते दिखाई देते हैं।

संदर्भ–सूची

1. जयनंदन. सन्नटा भंग. दिल्ली, दिशा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1993.
2. वही, पृ. 172.
3. जयनंदन. एक अकेले गान्ही जी. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण, 2000, पृ. 12–13.
4. जयनंदन. सूखते स्रोत. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण, 2003, पृ. 115–16.
5. जयनंदन. भितरघात. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण, 2013, पृ. 10–11.
6. वही, पृ. 91.
7. जयनंदन. सेराज बैंड बाजा. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2013.
8. जयनंदन. संकलित कहानियां. नई दिल्ली, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, प्रथम संस्करण, 2015, पृ. 90.

––==00==––